Ç

. श्रम विभाग

ऋदि श

दिनांक 2। मार्च, 1986

सं० ग्रो०वि०/एफ०डी०/11149.—चूंकि हरियाणाँ के राज्यपाल की राय है कि जनरल मैनेजर, दी गुडगांवा सैन्ट्रल कौप्रेटिव कन्जूमर्ज स्टोर लि० गुड़गांवा के श्रमिक श्री थावर सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीग्रोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947. की घारा 10 की उपघारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणों के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भ्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त मधिसूचना की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फ़रीदाबाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीज्ञ मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या हो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री यावर सिंह, पुत श्री मोहन लाल की सेवाघों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं भ्रो विविविद्यार/5-85/11156-- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैनेजिंग डायरैक्टर, हरियाणा हटेट कोप डिवैलपमेंट बैंक लिंक, चण्डीगढ़, (2) मैंनेजर, प्राईमरी कोप लैंड डिवैलपमेंट वैंक लिंक, टोहाना के श्रमिक श्री प्रताप सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिध्नियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग)द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78-32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री प्रताप सिंह, पुत्र श्री प्रभु राम की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रीं वि | हिसार | 112-85 | 11162 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैं नेजर, हरियाणा राज्य परिवहन, सिरसा के श्रीमक श्री वृज लाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीटोगिक विवाद है;,

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझैते हैं;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78-32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रयन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री वृज लाल, पुत्र डूंगर राम की सेवाश्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस-राहत का हकदार है ?